स्वर प्रवाह

चित्र सौजन्य : नाथूलाल वर्मा

भारतीय संस्कृति में फागुन और चैत्र दोनों ही महिनों का अपना-अपना वैशिष्ट्य है। फागुन मस्ती का मास है तो चैत्र चैतन्य को जाग्रत करने का। ये दोनों ही महिने वसंतु ऋतु के वितान में होने से वासंतिक सुवास से सुवासित रहते हैं। इस वासंती परिवेश में प्रफुल्ल प्रकृति मुदितमना होकर न केवल शीतबंधन से मुक्ति का महोत्सव मनाती है अपितु सृष्टि में सृजन के बीज वपन भी करती है। यही बीज फागुनी बयार का पाथेय पाकर चैत्र में प्रस्फुटित होते हैं।

चैत्र माह सृजन की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु आध्यात्मिक उत्कर्ष की दृष्टि से भी विशेष है। चैत्र से ही भरतीय नव संवत्सर का शुभारंभ होता है और चैत्रीय नवरात्र में ही नव दुर्गा की आराधना होती है। जन-जन के राम का जन्म भी इसी माह हुआ और इसी माह में उनका राज्याभिषेक हुआ। पौराणिक मान्यता के अनुसार चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की और विष्णु का प्रथम मत्स्य अवतार भी इसी माह हुआ। चैत्र माह में ही गणगौर जैसा पर्व मनाया जाता है जिसमें मां भगवती की पूजा-अर्चना कर अखण्ड सौभाग्य की कामना की जाती है।

चैत्र यानी चैतन्य, चेतना और जाग्रत जीवन का स्फुरण। पुरुष और प्रकृति की ऊर्जा का सृजनात्मक समागम। अंतर में झांकने, उसका मूल्यांकन करने और जीवन ऊर्जा को ऊर्जस्वित करने का अवसर। होली अन्तर्मन के कालुष्य को भस्मीभूत करने का पर्व है वहीं चैत्र जीवन मूल्यों की उत्कर्षता और सर्वशुभता का। यह सर्वशुभता का ज्ञान ही हमें चैतन्य प्रकृति के पथ पर प्रशस्त करता है और न्याय, धर्म, सत्य की जीवन दृष्टि प्रदान करता है। इंद्रियमूलक भ्रमित जीवन से उबार कर, जीवन चेतना से मानवीय चेतना की ओर ले जाता है। शरीर से पृथक होकर, जीवन को समझने की समझ देता है। सतर्कता और सजगता से जीना सिखाता है। भ्रमित मानव से देव और दिव्यमानव के पथ पर अग्रेषित करता है। सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज, स्वअनुशासन तथा न्याय, धर्म और सत्य की दृष्टि ही जीवन का लक्ष्य और सौन्दर्य है और यही जीवन यात्रा का लक्ष्य है। चैत्र में हम इस जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की चेतना प्राप्त करें इसी कामना और राजस्थान दिवस की शुभकामना के साथ यह अंक आपके हाथों में-

देवेन्द्र शर्मा